International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
International Open Access Journal | www.ijtsrd.com
ISSN No: 2456 - 6470 | Volume - 3 | Issue – 1 | Nov – Dec 2018

शतपथ ब्राह्मणोक्त श्रौतयज्ञीय आख्यान

डॉ. आर. के. त्यागी[1], तरूण कान्ती सतपती[2]

[1]शोध निर्देशक, संस्कृत विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ (यू.पी.)
[2]शोधार्थी, संस्कृत विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ (यू.पी.)

न्य वैदिक तथा पौराणिक ग्रन्थों में अनेक आख्यानों का प्रणयन प्रवचन तथा पल्लवन हुआ है। परम्परया पश्चाद्वर्ती साहित्य में भी कुछ नवीन तथ्यों का संकलन कर, काल्पनिक व्यक्ति एवं स्थान विशेष का संमिश्रण कर आख्यानों का विस्तार होता गया । इन आख्यानों का आधार मूलतः वैदिक संहिताएं है। प्रथम दृष्ट्या वेदों से ही आख्यान प्रादुर्भूत हैं। किन्तु ये आख्यान तथ्य विशेष को उजागृत करने हेतु कथाओं को कल्पित कर वैदिक अलंकारों को उद्घाटित करने हेतु सृजित है पुराण ग्रन्थ स्पष्टतः, प्रतिज्ञा करते हैं कि " आख्यानों द्वारा वेद और इतिहास के सारभाग को उद्धृत किया जाता है । " यद्यपि एतादृश कल्पित कथानक यदा कदा ऐतिहासिक से प्रतीत होते हुए जनमानस को दिग्भ्रमित करते हैं तथापि वैदिक आख्यानों का वास्तविक अथवा लौकिक इतिहास से कोई तादात्म्य नहीं होता यह तो कथन मात्र है। शतपथ ब्राह्मण में एक स्थल पर इस तथ्य को स्पष्ट शब्दों में प्रकट कर दिया है- "हे इन्द्र ! तुम कभी किसी से नहीं लड़े। तुम्हारा कोई शत्रु नहीं है। तुम्हारे युद्धों का जो वर्णन किया जाता है वह सब माया, बनावटी या काल्पनिक है। न आज कोई तुम्हारा शत्रु है न पहले तुमसे लड़ा था। कुमारिल भट्ट भी एतत् विषयक स्वमन्तव्य प्रकाशित करते हैं- "नित्य वाक्यार्थ के ज्ञान में ऋषियों सम्बन्धी उपाख्यान अनित्य जैसा प्रतीत होता है । यद्यपि वह नित्य होता है, उसमें जैसे कोई व्याख्यान करता हुआ किन्हीं पदों अथवा अवयवों को चेतना के सदृश अध्यारोपित करता हुआ तद्विषयक वध आदि का निरूपण करता है। उनके परस्पर संवाद का वर्णन करता है । इसी प्रकार ऋषि तथा तत्सम्बद्ध आख्यान आर्षेय की कल्पना की जाती है। "

वस्तुतः मनुष्य की सदा से ही सनातनी वृत्ति कथामयी रचनाओं में स्वतः आकृष्ट होती रही है, अतः ऋषियों ने भी इस सरस शैली का अनुमोदन कर उन क्लिष्ट स्थलों को सुगमतया आत्मसात् कराने के उद्देश्य से मनोज्ञ आख्यानों का प्रणयन किया है। एवंविध कथाओं, आख्यान, उपाख्यानों को कहने वालों की एक सुदीर्घ परम्परा चली आ रही है। ऐतरेय ब्राह्मण में एतादृश कथाविदों को आख्यानविद् संज्ञा से अभिहित किया गया है। लौकिक साहित्य में इन आख्यानों का इतना अधिक विस्तार हो गया कि आख्यानों की मूल भावना तिरोहित हो जाती है। उदाहरणार्थ वेदों में विष्णु के तीन क्रमों का उल्लेख है ब्राह्मण एवं वैदिक साहित्य विष्णु के स्वरूप और उसके त्रिपादविक्रम को अध्यात्म तथा अधिदैवत पक्ष में स्पष्टतः निरूपित करते हैं। तथापि परवर्ती साहित्य में यह आख्यान एक नवीन कथानक का जन्म लेता है और बलि-वामनावतार आख्यान का रूप धारण करता है। फलतः यह एक अलौकिक घटना प्रतीत होने लगती है। इसी प्रकार शुनः शेप, दधीचि, पुरूरवा - उर्वशी, सरमा-पणि आदि ऐसे अनेक आख्यान हैं जो परवर्ती साहित्य में विस्तार को प्राप्त हो जाते हैं।

आख्यानों का यह विस्तार कहाँ से आरम्भ हुआ इस विषय की समीक्षा करते हुए डॉ) सुधीर कुमार गुप्त का कथन है- "किसी भी प्राचीन विद्वान् ने उन प्रयोजनों को खोजने का प्रयास नहीं किया जिसके लिए आख्यान विकसित किये गए या बनाये गये। आख्यानों का वहविस्तार वेंकट माधव से प्रारम्भ होता है और आज तक चालू है। वेंकट माधव के समय में पुराणों की प्रतिष्ठा हो चुकी थी। वेंकट माधव ने स्पष्ट लिखा है कि उनका वेद- व्याख्यान प्राचीनों के

व्याख्यानों से इसी प्रकार सर्वथा भिन्न है, जिस प्रकार गाय, घोड़े से भिन्न होती है। इस कथन से स्पष्ट है कि प्राचीनों ने मंत्रों के व्याख्यानों में आख्यानों की उद्भावना नहीं की थी। दयानन्द सरस्वती ने आख्यानों का भिन्न रूप प्रस्तुत किया है ..... वे मंत्रों में आख्यानों की सत्ता अथवा अभाव के सम्बन्ध में कोई निश्चयात्मक कथन नहीं करते तो भी भूमिका में कुछ पौराणिक कथाओं की लाक्षणिक व्याख्या करते हुए उस व्याख्या की पुष्टि में उन्होंने अनेक वेदमंत्रों को उद्धृत किया है और ब्राह्मणों के कथनों और निर्वचनों के आधार पर उनकी व्याख्या की है। उनके ऋग्वेद और यजुर्वेद के भाषा का अध्ययन इंगित करता है कि उन्होंने वेदमंत्रों में किसी आख्यान या कथा को कहीं भी लक्षित नहीं किया है। इन मंत्रों की व्याख्या उन्होंने निर्वचनों वेदों के कथनों, ब्राह्मण ग्रन्थों, वैदिक दार्शनिक ग्रन्थों और मनुस्मृति के आधार पर की है। (वैदिक आख्यान और वास्तविकता, वैदिक आख्यानों की प्रकृति, पृ0 27)

ब्राह्मण ग्रन्थों में शतपथ ब्राह्मण को आख्यानों का आगार माना गया है । यतोहि शतपथ में श्रौतयज्ञों का सांगोपांग विवेचन प्राप्त होता है अतः अधिकांशतः आख्यानों का प्रयोग यज्ञीय विधि विधानों, यज्ञीय, द्रव्य, यज्ञों का उत्स आदि के निरूपण हेतु उद्धृत है। शताधिक आख्यानों का दिग्दर्शन इसी ग्रन्थ में उपलब्ध होता है। सर्वाधिक आख्यान सोमयाग तथा दर्शपूर्णमास यज्ञ से सम्बन्धित है। इतनी अधिक संख्या में आख्यान अन्य किसी ब्राह्मण में नहीं मिलते। यद्यपि कोई एक आख्यान अधिक विस्तार से किसी अन्य ब्राह्मण में भी मिल सकते हैं किन्तु इतने महत्वपूर्ण आख्यानों का एकत्र संयोग अन्यत्र अप्राप्त है। यदि पौराणिक आख्यानों का मूलरूप जानना है तो वह इसी ब्राह्मण में प्राप्त होगा । विश्व के प्रत्येक धर्म में प्राप्त जलप्लावन के आख्यान का सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वप्राचीन रूप शतपथ ब्राह्मण में प्रस्तुत है। वेद में जो आख्यान स्रोतरूप में प्राप्त है तथा पुराणों में जिनका काल्पनिक विकास प्राप्त है उन आख्यानों की मध्यस्थ कड़ी शतपथ में ही उपलब्ध है। अतः वैदिक एवं पौराणिक दोनों आख्यानों के अध्येताओं के लिए शतपथ का अध्ययन अपरिहार्य है।

आख्यानों का वैदिक स्वरूप

वेदेतर सम्पूर्ण वैदिक एवं लौकिक संस्कृत वाङ्मय का आलोडन करने से ज्ञात होता है कि वेदान्तर्गत संवादात्मक प्रसंगों को आख्यान शब्द से अभिहित प्रथमतः ब्राह्मणकाल से आरम्भ हुआ है। अनन्तर नाना कवियों, लेखकों, साहित्यकारों ने स्वग्रन्थों में अनेकों आख्यानों की कल्पनाएं की। इस प्रकार इन आख्यानों की एक सुदीर्घ परम्परा चली आ रही है। आख्यानों के स्वरूप चिन्तन से पूर्व हम प्रथम आख्यान पद पर विचार करेंगे।

आर्ष परम्परा में शास्त्रीय प्रक्रियानुसार वैदिक पदों का यौगिक विश्लेषण एवं निर्वचन करने की परम्परा रही है। इस पद्धत्यनुसार आख्यान शब्द " चक्षिङ व्यक्तायां वाचि" (अयं दर्शनेऽपि) धातु से निष्पादित है । चक्षि को "ख्याञ्" आदेश होकर "आ" उपसर्ग पूर्वक 'ल्युट्" (अन) प्रत्यय के योग से आख्यान शब्द सिद्ध है। व्युत्पत्त्यनुसार

"आख्यायते इति आख्यानम्' ' अथवा आ समन्तात् ख्यायते प्रकथ्यते अनेन इति आख्यानम्' अर्थात् जो कहा जाए अथवा जिसके द्वारा कुछ कहा जाए वह आख्यान कहलाता है।

वेदोक्त आलंकारिक वर्णन एवं ब्राह्मणोक्त कल्पित कथाएँ आख्यान, आख्यायिका, कथा, गाथा, पूर्ववृत्त, इतिहास आदि संज्ञाओं से व्यवहृत है। यद्यपि उपर्युक्त शब्द एक ही अर्थ के समकक्ष होते हुए भी जहाँ कुछ ग्रन्थों में पर्यायवाची रूप में उद्घृत हैं वहीं कुछ विद्वानों के मत में भिन्न-भिन्न अर्थ के प्रतिपादक भी है। मत वैभिन्न के कारण ही वैदिक संस्कृत साहित्य से लेकर

लौकिक संस्कृत साहित्य तक इनकी विभिन्न परिभाषाएँ स्थापित की गई हैं। इस प्रसंग में सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय, विभिन्न कोष एवं नाना विद्वानों के मतानुसार आख्यान शब्द का पारिभाषिक अर्थ ज्ञात करेंगे।

वेदों में अनेक सूक्त आख्यानात्मक शैली में वर्णित है, पुनरपि आख्यान पद का प्रयोग वेदों में कहीं भी दृष्टिपथ नहीं है। चक्षिङ् धातु के आख्यात् अख्यत् चख्यथुः आदि क्रियारूपों का प्रयोग वहाँ अपने मूलार्थ में है। इसी प्रकार आख्यायिका शब्द का प्रयोग भी वेद में उपलब्ध नहीं होता । कथा एवं गाथा शब्द का प्रयोग अवश्य ही प्राप्त है वह भी कहानी अर्थ में नहीं। गाथा शब्द धात्वनुसारी स्तुति

प्रशंसा अर्थ में प्रयुक्त पद क्यों, कैसे, किस प्रकार आदि प्रश्नवाचक अर्थ में है। कथा व्यवहृत है। यतोहि आख्यान परम्परा, ब्राह्मण ग्रन्थों से उद्भूत है, अतः ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौतग्रन्थों में आख्यान शब्द बहुशः प्रयुक्त है। उनमें कई प्रसङ्गों में आख्यानम् आख्यायिका आख्यानविद् शब्दों का प्रयोग किया गया है।

ऐतरेय ब्राह्मण में शुनः शेप प्रसङ्ग में स्पष्टत: "शौनः शेपम् आख्यानम् " वाक्य द्वारा इन्हें आख्यान संज्ञा दी गई है। शांखायन श्रौतसूत्र में भी तदेतत् "शौन: शेपम् आख्यानम्" कहा है। आपस्तम्ब श्रौतसूत्र में इस आख्यान के लिए आख्यायते क्रिया का प्रयोग है "शौन: शेपम् आख्यायते । " इस क्रिया का प्रयोग जैमिनीय ब्राह्मण में भी हुआ है- " यौधाजयम् इत्याख्यायते " 'औशनम् इत्याख्यायते ।' शतपथ ब्राह्मण में अश्वमेध यज्ञ के प्रसङ्ग में याज्ञिक को आख्यान श्रवण का निर्देश प्राप्त होता है, वहाँ 'पारिप्लवम् आख्यानम्" वाक्य द्वारा आख्यान शब्द का व्यवहार किया गया है। इसमें पूर्व राजाओं के यज्ञों का वृत्तान्त सुनाया जाता है। इसी प्रकार सौपर्ण कथा कहने वालों को " आख्यानविद" संज्ञा से अभिहित किया गया है। ऐतरेय आरण्यक में भी " आख्यानम्" पद का प्रयोग प्राप्त होता है। तैत्तिरीय आरण्यक में " आख्यायिका" शब्द का व्यवहार है।

निरुक्तकार यास्काचार्य ने आख्यान शब्द का प्रयोग अनेक स्थलों पर किया है। निरुक्त में आख्यान के तीन अर्थ उद्धृत हैं। (1) उत्तर सिद्धान्त या प्रतिवचन (2) कथन (3) वृत्तान्त या कथानक । यास्क ने ब्राह्मण ग्रन्थों के समान यम- यमी, सरमा-पणि, उषा सूर्य आदि आख्यानात्मक मंत्रों की व्याख्या प्रसंग में आख्यान संज्ञा का प्रयोग किया है। इनके अतिरिक्त इसी अर्थ में कुछ सूत्रग्रन्थों और अनुक्रमणिकाओं में भी आख्यान पद का प्रयोग उपलब्ध है।

बृहद्देवेताकार ने पुरूरवा - उर्वशी सूक्त को आख्यान की संज्ञा दी है। अन्यत्र इसे 'पवित्राख्यान' नाम दिया है। एक अन्य स्थल पर 'परस्पर आह्वानात्मक' होने से इसे आख्यान माना है। यास्क इसे संवाद तथा शौनक इतिहास संज्ञा देते हैं। इसी प्रकार सुबन्धु की कथा वाले सूक्तों के इतिवृत्तात्मक वर्णन को भी आख्यान शब्द से संज्ञित किया गया है।

इतिहास शब्द का प्रथम प्रयोग अथर्ववेद में प्राप्त होता है। ब्राह्मण और उपनिषदों में भी इसका बहुधा उल्लेख है। इस शब्द को पुराण से भिन्नार्थ परिभाषित किया गया है। इन शब्दों के बहुवचन प्रयोग से यह प्रतीत होता है कि यह कोई ग्रन्थ विशिष्ट न होकर शैली विशेष थी। इस शैली का अनुसरण करते हुए जो विद्वान् वेदमंत्रों की व्याख्या करते थे सम्भवतः उन्हें 'ऐतिहासिकाः' कहा जाता था। ऐतिहासिकों में विशेष रूप से ब्राह्मण ग्रन्थों का ग्रहण किया जाता है, यतोहि इन्हीं ग्रन्थों में कथात्मक शैली में समझाने की परम्परा है। अलौकिक प्राकृतिक एवं मानवीय सभी से सम्बन्धित आख्यान इनमें वर्णित हैं।

उपर्युक्त उद्धरणों से संकेतित है कि वैदिक साहित्य में कथा, आख्यायिका, इतिहास, पुराण आदि शब्दों का आख्यान से भिन्न अर्थ एवं विद्या में प्रयोग हुआ है। यथा- "कथा" शब्द वेदों में 'प्रश्नवाचक' है तो उपनिषदों में यह "दार्शनिक वाद विवाद" के अर्थ में प्रयुक्त

लौकिक संस्कृत साहित्य में आख्यान शब्द पृथक्-पृथक् काव्यविधा के रूप में व्यवहृत होने लगा । काव्य शास्त्रकारों ने इनको पृथक विधा के रूप में परिभाषित किया है। यद्यपि सामान्य व्यवहार में इनका पर्यायवाची रूप में भी प्रयोग होता रहा है, अतएव संस्कृत कोशों में आख्यान के अनेक सामान्य अर्थ प्राप्त होते हैं। यथा- कथन, उक्ति, कथा, वृत्तान्त, पुरावृत्तकथन, गाथा एवं आख्यायिका आदि ।

पाणिनि अष्टाध्यायी में आख्यान शब्द का दो प्रकार के अर्थों में प्रयोग किया गया है- (1) उत्तर या प्रतिवचन (2) इत्थंभूत आख्यान अर्थात् यथार्थ वृत्तान्त, कथा या इतिवृत्तात्मक कथन । व्याकरण महाभाष्य में पतञ्जलि ने आख्यान के तीन उदाहरण प्रस्तुत किये हैं यावक्रीतक, प्रैयङ्गविक, यायातिक। सम्भवत, ये उस समय के प्रसिद्ध आख्यान थे। काशिका में भी आख्यानों की चर्चा है। शाकटायन व्याकरण में अविमारक आख्यान का उल्लेख है। इस प्रकार उस काल में 44 'आख्यान नामक विधा का पर्याप्त प्रचलन था । "

रामायण महाभारत में कथा - तत्व प्रधान ऐतिहासिक घटनाओं एवं इतिवृत्तात्मक वर्णनों को "आख्यान" पद से अभिहित किया गया। रामायण की सम्पूर्ण रामकथा के लिए आख्यान शब्द का प्रयोग किया गया है। महाभारत में

अनेक कथाएँ प्राप्त होती है जिन्हें आख्यान कहा गया है। यथा- यक्ष- युधिष्ठिर संवाद को आख्यान कहा गया है। इन्द्रविजय नामक प्रसिद्ध आख्यान है। नलोपाख्यान रामोपाख्यान आदि इसके स्पष्ट उदाहरण है।

पुराण ग्रन्थों में कथा आख्यान पुरावृत्त शब्द पर्यायवाची रूप में प्रयुक्त इनमें वर्णित कथाएँ प्राचीन एवं अलौकिक हैं। पुराणों के अनुसार- पुराण संहिता की रचना अनेक आख्यानों उपाख्यानों और गाथाओं के संग्रह से की गई है। आख्यानरूप में कहने एवं जानने वालों को "आख्यानकुशलाः ", विशेषण से अभिहित किया गया है।

आचार्य हेमचन्द्र ने एक व्यक्ति द्वारा एक समय में कही जाने वाली कथा को "आख्यान" कहा है। इस संदर्भ में वैदिक साहित्य एवं प्राचीन इतिहास मर्मज्ञ पं(0) भगवद्दत्त का कथन है- "स्वल्पाकार किसी प्रधान व्यक्ति की एक जीवन घटना पर लिखी गई, थोड़े काल में कही जाने वाली इतिहास विषयक कथा आख्यान है। संभव है कुछ आख्यान, मंत्रों की आलंकारिक घटनाओं पर भी बने हों और उनका इतिहास से सम्बन्ध न हो।

आचार्य भामह ने कथा, आख्यायिका और गाथा के पृथक् लक्षण दिये है। आचार्य विश्वनाथ ने कथा एवं आख्यायिका विधा में कुछ भिन्नता प्रदर्शित करते हुए आख्यानों को कथा और आख्यायिका के अन्तर्गत माना है। आचार्य दण्डी की भी यही मान्यता है। साहित्य दर्पण में " आख्यानं पूर्ववृत्तोक्तिः " कहकर आख्यान को "पूर्ववृत्तकथन" कहा है किन्तु उक्त ग्रन्थ में प्राचीन आख्यानों का उदाहरण के रूप में कोई उल्लेख नहीं है। वहाँ " कथा" के प्रतिनिधि ग्रन्थ के रूप में बाणचरित " कादम्बरी" को और आख्यायिका" के लिए बाणकृत हर्षचरित को उदाहृत किया गया है।

मनुस्मृति में " आख्यान" का प्रयोग प्राचीन कथा के लिए है और गाथा का प्रयोग प्राचीन किन्तु कल्पित कथा या कहावत के लिए हुआ है। मातंगलीला में "उर्वशी अप्सरा और पुरूरवा की कथा को आख्यान के रूप में उद्धृत किया गया है। भारतीय दर्शनों में आख्यान शब्द " कथन" अर्थ एवं "दर्शन" अर्थ में प्रयुक्त

वैदिक एवं लौकिक साहित्य की ही तरह हिन्दी साहित्यकारों ने भी आख्यान, आख्यायिका, कथा, इतिहास, पुराण आदि शब्दों की पर्याप्त समीक्षा की है। हिन्दी समीक्षकों ने इन प्रसंगों पर अपने-अपने मतों के प्रस्तुतीकरण के अतिरिक्त आख्यानों को कुछ नई संज्ञाएं दी है। यद्यपि हिन्दी कोशकारों ने आख्यान शब्दार्थ के अन्तर्गत वृत्तान्त, कथा, कहानी, गाथा, वर्णन, किस्सा, उपन्यास, इतिहास, लेखक द्वारा रचित कल्पित कहानी आदि अर्थों को उद्धृत किया है। किन्तु इसके साथ-साथ कुछ आलोचकों ने आख्यान के स्वरूप को अधिक स्पष्ट एवं सुनिश्चित करने के लिए इन शब्दों का प्रयोग न कर पृथक शब्दों का नव्य प्रयोग किया है।

डॉ () नगेन्द्र तथा कवि बच्चन ने "दंतकथा " डॉ) रामअवध द्विवेदी ने "पुरावृत्त" डॉ० सत्येन्द्र ने " धर्मगाथा" कवि कुंवरनारायण ने "पुराकथा" डॉ) लक्ष्मीनारायण शर्मा ने "पुराख्यान" और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने "मिथक" शब्द का प्रयोग किया है। सम्प्रति वैदिक एवं पौराणिक आख्यानों के लिए मिथक शब्द का प्रयोग सर्वाधिक प्रचलित हो चुका है। अंग्रेजी में एतादृश आख्यानों को "माइथोलोजी" (डमजीवसवहल) कहा गया है। सम्भवतः उसी की समानार्थता एवं ध्वनि साम्य के कारण इस प्रयोग को बल मिला है।

समीक्षा शास्त्र में सीताराम चतुर्वेदी इस शब्द का विश्लेषण करते हुए लिखते हैं- "पौराणिक कथा के लिए योरोप में जो 'मिथ' शब्द चला वह वास्तव में धार्मिक शब्द है।" डॉ) लक्ष्मीनारायण शर्मा ने इसकी व्युत्पत्ति और अर्थ पर प्रकाश डालते हुए इसे मूलतः ग्रीक भाषा का शब्द माना है- 'मिथ' मूलतः ग्रीक भाषा का शब्द है। इस भाषा का यह एक पुरातन शब्द है जिसका अर्थ है "वाणी का विषय "। वाणी का विषय से तात्पर्य है- "एक कहानी एक आख्यान जो प्राचीनकाल में सत्य माने जाते थे और जो कुछ रहस्यमय तथा गोपनीय अर्थ भी देते थे।"

निष्कर्षतः समग्र संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में किये गए विवेचन से यह तथ्य प्रकट होता है। कि वैदिक आख्यानों में अधिकांशतः अलौकिकता का पुट है, लौकिकता पूर्णतः संघटित नहीं होती है, अतः उन्हें प्रमुखतः अलौकिकता प्रधान आख्यान कहा जा सकता है। "डॉ) सुरेन्द्र कुमार ने इस संदर्भ में अपने शोध प्रबन्ध में निम्न तत्व परिगणित किये हैं".

1. प्राकृतिक या लौकिक भावों की अभिव्यक्ति ।
2. अलौकिकता/ रहस्यात्मकता का आधार
3. वृत्तान्त या इतिवृत्तात्मक शैली |
4. कल्पना प्रवणता ।
5. प्रतीक एवं रूपक संयोजना ।

अतएव वैदिक आख्यानों के स्वरूप को समझने के लिए उनके मूलपाठ का अध्ययन मनन नितान्त आवश्यक है। उसकी शब्दावली एवं शैली को देखकर ही उसके प्रतिपाद्य विषय को निश्चित करना चाहिए। मन्त्रोक्त एवं सूक्तान्तर्गत, ऋषि, छन्द तथा स्तर विन्यास का परिज्ञान होना अत्यन्त सहयोगी सिद्ध होता है। वेदान्तर्गत आधारों के अतिरिक्त वेदेतर साहित्य - ब्राह्मण आरण्यक उपनिषद् तथा वेदाङ्ग जो आख्यानों के स्वरूप को समझने में विशिष्ट सहायक माने जाते हैं, इनका भी अध्ययन अत्यन्त उपयोगी होता है।

आख्यानों की आवश्यकता एवं उपयोगिता

सत्कार्यवाद के प्रवर्तक सांख्यकार का प्रबल सिद्धान्त है कि प्रत्येक कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व अपने उपादान कारण में अव्यक्त रूप से विद्यमान रहता है। उक्त सिद्धान्तनुसार तत्ववेत्ता आप्त पुरुषों को भी श्रीतयज्ञ जैसे गूढ़ तत्वों के विवेचनार्थ नवीन विधा की आवश्यकता अनुभूत हुई । यतोहि "प्रयोजनं अनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते " इस लोकोक्ति की चरितार्थता संहितोत्तर काल में अधिक संगत प्रतीत होती है, अतएव तत्कालीन दूरद्रष्टा ब्राह्मणों ने धर्मभीरू जनता को अधर्माचण से पराङ्मुख कर सत्याचरणोन्मुख करने हेतु आनुषङ्गिक रूप से विहित यज्ञीय कर्मकाण्ड से आबद्ध कर लिया था। किन्तु शनैः-शनैः ये यज्ञ यागादि कर्मकाण्ड, तत्कालीन समय में जटिल एवं बाह्य आडम्बर मात्र रह गए। येन जन साधारण के लिए यह दुष्प्राप्य एवं दुर्बोध विषय बनने लगे। विभिन्न व्याख्याकारों के नाना मत यज्ञों के रहस्यात्मक स्वरूप को दिग्भ्रमित करने लगे। फलतः ऐसे दुरूह स्थलों को सुगमतया प्रतिपादित करने के लिए यज्ञों के सामान्य व्याख्यान के अतिरिक्त जिस नूतन विधा अथवा शैली का आविष्कार हुआ वह 'आख्यान" शैली कहलाई ।

यह तत्कालीन प्रसिद्ध शैली समस्त ब्राह्मण साहित्य में दृष्टिगत है। पाश्चात्य विद्वान् मैक्डॉनल ब्राह्मण ग्रन्थों को आख्यानों तथा गाथाओं का " आकर" स्वीकार करते हैं। ये वैदिक आख्यान ज्ञान गाम्भीर्य की दृष्टि से अत्यन्त उपादेय रहे हैं। आचार्य यास्क भी आख्यान शैली का महत्वपूर्ण स्थान मानते हैं। छान्दोग्योपनिषद् के भाष्य में आचार्य शङ्कर आख्यानों का मूल प्रयोजन तत् तत् प्रतिपाद्य विषय की सरल सुखकर प्रस्तुति एवं ज्ञान सम्प्रेषण की रुचिकर शैली स्वीकार करते हैं। मीमांसा सूत्रभाष्यकार शबर स्वामी ने अर्थवादगत प्ररोचना तथा निन्दा को ध्यान में रखकर वैदिक विधि व अर्थवाद की दृष्टि से जहाँ इनकी उपयोगिता स्वीकार की है, वहीं वे इनके कल्पित एवं असत्य पक्ष को भी मानते हैं।

यद्यपि आख्यानों में सत्य, आंशिक सत्य, काल्पनिक कथाएँ हैं, तथा रूपक अलंकारों एवं अतिशयोक्ति का भी बाहुल्य है, तथापि आख्यानकर्त्ता का लक्ष्य सदैव लोगों को धर्म प्रेरणा देना ही रहा है। मनुष्यों में यज्ञ के प्रति रुचि उत्पन्न हो यही इनका उद्देश्य है। उनका सिद्धान्त है जो धर्म का पालन करेगा उसकी रक्षा धर्म भी करेगा।

शतपथ ब्राह्मण का मुख्य विषय यज्ञ विवेचन है, किन्तु यज्ञीय विवेचना के साथ-साथ कृत-अकृत कर्म, ऐतिहासिक विवेचन- जिनमें राजाओं के वंशों का वर्णन, देव, ऋषियों का वर्णन, सृष्टि रचना आदि इनके प्रति उन्मुख होने हेतु कथा, गाथा, आख्यान, उपाख्यान की रचना की गई। जनमानस का विषय के प्रति आकर्षण हो अतएव इस माध्यम से स्वबुद्धि, शक्ति, रुचि और समर्थ्यानुरूप न्यूनाधिक अंशों में विषय के प्रति अग्रसर पुराणों एवं वेदों के व्याख्याता पं() श्रीराम शर्मा ने इन आख्यानों का प्रयोजन स्पष्ट करते हुए कहा है कि "ऐतिहासिक वर्णन से जहाँ ये आकाशीय पिण्ड हैं वही पृथिवीस्थ भी हैं। अतः इनसे दो प्रयोजन सिद्ध है प्रथम इतिहास का भी हमे पता लगता है और द्वितीय आलंकारिक दृष्टि से तथ्य सुस्पष्ट हो जाते हैं। "

डॉ) उर्मिला शर्मा ने शतपथ के सम्पूर्ण आख्यानों के प्रयोजन को नौ भागों में वर्गीकृत किया है, जो निम्न

1. यज्ञ के विशिष्ट अनुष्ठानों का प्रतिपादन ।
2. यज्ञ विधि की विभिन्न प्रक्रियाओं का समर्थन।
3. यज्ञ में प्रयुक्त संहिता मंत्रों का हेतु प्रदर्शन ।
4. यज्ञ से सम्बद्ध देवताओं की महिमा एवं पराक्रमों का प्रकाशन।

5. देवों का स्थान निर्धारण एवं उपाधि विशेष का हेतु प्रदर्शन ।
6. यज्ञीय उपकरणों की सार्थकता का प्रदर्शन ।
7. यज्ञ - विधि वर्णन में आगत छंदो, पात्रों, वृक्षों, पशुओं, वनस्पतियों, अस्त्र-शस्त्रों आदि के शब्दों का निर्वचन ।
8. सृष्टि रचना की प्रतीकात्मकता का निदर्शन ।
9. विधि विधानों की पुष्टि हेतु इतिहास कथन।

वस्तुतः आख्यान-साहित्य केवल कपोल-कल्पित नहीं है, अपितु वह समाज की सभ्यता, संस्कृति तथा इतिहास का दर्पण है। आख्यानों में जड़ चेतन और लौकिक अलौकिक तत्वों का अद्भुत समन्वय है। इसी कारण उनकी शैली भी प्रायः रूपकमयी या प्रतीकात्मक होती है। अतः इन आख्यानों की आवश्यकता एवं उपयोगिता यही मानी गई है कि वेदों के गूढ़ तत्वों एवं यज्ञों के रहस्यवादी वर्णनों को विशद व्याख्याति करने के साथ रोचक कथा शैली में उपस्थित करते हैं, जिससे सामान्य स्तर के पाठक भी उनको निस्सन्देह समझ सकते हैं। इनके द्वारा जनसाधारण में आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक शिक्षा का प्रचार होता रहे।

संदर्भ सूची

भागवत् () 1/3/42 "सर्ववेदेतिहासानां सारं सार समुद्धृतम।

स तु संश्रावयामास महाराजं परीक्षितम् " ॥

- शतः ब्रा0 11/1/6/10 न त्वं युयुत्से कतमच्चनाहर्न तेऽमित्रो मघवन् कश्चनास्ति ।

मायेत्सा ते यानि युद्धान्याहुर्नाद्य शत्रु ननु पुरा युयुत्स ।। मीमांसा तन्त्रवार्तिक- 1/2/41, पृ0 64

- ऐत) ब्रा0 3/35/1
- पावमानी पत्रिका अंक अक्टूबर-दिसम्बर 1999, पृ0 44, 45
- धातु (अदादि)
- चक्षिङः ख्याञ् अष्टा(0) 2/4/54

आख्यात् ऋक् 4/2/18, 7/60/3, 8/25/7@ अख्यत् ऋ० 4/14/1

चख्यथुः- ऋक्() 7/70/4 ऋ०- 1/167/6, 1/7/1 आदि।

गैस्तुतौ धातु से औणदिक थन् प्रत्यय (उणादि 2/4)

- P-24-20 1/54/1 कैसे ऋ० 1/185/1, 4/3/5, यजु - 2/32, 17/18

किस प्रकार, ऋक् 1/41/7

ऐत) ब्रा0- 7/18

- शांखा) श्रौत0- 15/27

आप श्रौत0- 18/19

जैमि) ब्रा0- 1/122 1/127

शत० ब्रा0- 13/4/3/2

ऐत0 आर0- 2/3/4

तैत्ति0 आर0 2/3/4

निरु0 उत्तर- 6/7, कथन- 10/10/46,

वृत्तान्त या कथानक 12/41, 5/21

उषा- सूर्या आख्यान- 5/2/1

सरमा पणि आख्यान- 11/25

यम-यमी आख्यान- 11/34

- वैता) श्रौत0- 36/24

आश्व) श्रौत0- 9/3/13

'पुराख्यान और कविता", पृ0 9

'समीक्षा शास्त्र", पृ0 656-657

'आत्मजयी"

"वैदिक आख्यानों का वैदिक स्वरूप" प्रथम अध्याय, पृ0 25 सांख्यकारिका - 9. असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात् ।

शक्तस्य शक्यकारणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम् ।।

The chief human interest of these Brahmanas lies in the numerous mythus and legends, which they contain- A History Sanskrit Literature, page- 175, A.A. Macdonell.

- निरु0 10/10 " ऋषेः दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवति आख्यानसंयुक्ता " • शांकर भाष्य 5 / 11,

'आख्यायिका तु सुखावबोधार्था विद्यासम्प्रदान न्याय प्रदर्शनार्था च " ।।

शाबर भाष्य- 1/2/10

- असद्वृत्तान्तान्वाख्यानम्, स्तुत्यर्थेन प्रशंसाया गम्यमानत्वात् ।
- इहान्वाख्याने वर्तमाने द्वयं निष्पद्यते यच्च वृत्तान्तज्ञानम्, यच्च कस्मिंश्चित् प्ररोचना द्वेषो वा । तत्र वृत्तान्तान्वाख्यानं न प्रवर्तकं चेति प्रयोजनाभावादनर्थकमित्यविवक्षितम्, प्ररोचनया
- तु प्रवर्तते द्वेषान्निवर्तते इति तयोर्विवक्षा ।।
- मनु) " धर्मो रक्षति रक्षितः " ।

वा) पु) भूमिका भाग ।

'शतपथ ब्राह्मण - एक सांस्कृतिक अध्ययन", अ० 9, पृ० 256-257

International Journal of Trend in Scientific Research and Development
IJTSRD
International Journal of Trend in Scientific Research and Development
ISSN: 2456-6470